अध्ययन सामग्री

बी. ए. (संस्कृत) पार्ट 3

प्रश्नपत्र – षष्ठ

डॉ० मालविका तिवारी

सहायक प्रोफैसर

संस्कृत विभाग

एच. डी. जैन कॉलेज

वी. कुं. सिं. वि०

आरा

08.07.20

अव्ययीभाव समास

रूपसिद्धि

1) इतिहरि – लौकिक विग्रह – इतेः इति (शब्दप्रकाशः)
अलौकिक विग्रह – हरि ङस् इति

• 'अव्ययं विभक्ति०' सूत्र से प्रकाश (ख्याति) अर्थ में विद्यमान 'इति' अव्यय का 'हरि' शब्द के साथ समास हुआ है।
• 'इति' अव्यय शब्दप्रादुर्भाव अर्थ में समस्त हुआ है।
• 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिक संज्ञा
• 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' से सुप् (ङस्) का लोप

हरि इति

• 'प्रथमा निर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' से 'इति' की उपसर्जन संज्ञा
• 'उपसर्जनं पूर्वम्' से उपसर्जनसंज्ञक 'इति' का पूर्वप्रयोग

इति हरि

• 'एकदेशविकृतमनन्यवत्' इस न्याय से पुनः प्रातिपदिक संज्ञा
• 'स्वौजस०' से 'सु' विभक्ति

इति हरि सु

• 'अव्ययीभावश्च' से अव्यय संज्ञा
• 'अव्ययादाप्सुपः' से सु लोप होकर 'इति हरि' पद बनता है।

2) अनुविष्णु - लौकिक विग्रह - विष्णोः अनु (पश्चात्)
अलौकिक विग्रह - विष्णु ङस् अनु

'अनु' अव्यय 'पश्चात्' इस अर्थ में प्रयुक्त होता है।

'विष्णोः पश्चात्' इस विग्रह में विष्णु ङस् तथा अनु का 'अव्ययं विभक्ति०' इस सूत्र से पश्चात् अर्थ में अव्ययीभाव समास हुआ।

'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिक संज्ञा

'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' से सुप् (ङस्) का लोप

विष्णु अनु

'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' से 'अनु' की उपसर्जन संज्ञा।

'उपसर्जनं पूर्वम्' से उपसर्जनसंज्ञक 'अनु' का पूर्वप्रयोग

अनु विष्णु

'एकदेशविकृतमनन्यवत्' इस न्याय से पुनः प्रातिपदिक संज्ञा

'स्वौजस०' से 'सु' विभक्ति

अनु विष्णु सु

'अव्ययीभावश्च' से अव्यय संज्ञा

'अव्ययादाप्सुपः' से 'सु' लोप होकर 'अनुविष्णु'

अथवा अनु विष्णु सु

इस अवस्था में 'अव्ययीभावश्च' से नपुंसक का विधान करने पर 'स्वमोर्नपुंसकात्' से 'सु' विभक्ति का लोप करने पर 'अनुविष्णु' प्रयोग सिद्ध होता है।

3) अनुरूपम् - लौकिक विग्रह - रूपस्य योग्यम्
अलौकिक विग्रह - रूप ङस् अनु

'रूपस्य योग्यम्' इस विग्रह में रूप ङस् तथा अनु का 'अव्ययं विभक्ति०' सूत्र से योग्यता रूप अर्थ में अव्ययीभाव समास हुआ।

'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा

'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से सुप् (ङस्) का लोप

रूप अनु

'प्रथमा निर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से 'अनु' की उपसर्जन संज्ञा

'उपसर्जनं पूर्वम्' से उपसर्जन संज्ञक 'अनु' का पूर्व प्रयोग

अनु रूप

'एकदेशविकृतमनन्यवत्' इस न्याय से पुनः प्रातिपदिक संज्ञा

'स्वौजस०' से 'सु' विभक्ति

अनु रूप सु

'अव्ययीभावश्च' से अव्यय संज्ञा

'अव्ययादाप्सुपः' से सु लोप प्राप्त था, किन्तु 'नाव्ययीभावादतो-ऽत्वपञ्चम्याः' सूत्र से उसका निषेध कर उसके स्थान पर 'अम्' आदेश किया गया

अनु रूप अम्

'अमि पूर्वः' से 'अम्' के अ को पूर्वरूप होकर

अनुरूपम् प्रयोग सिद्ध होता है।

4) प्रत्यर्थम् — लौकिक विग्रह — अर्थम् अर्थं प्रति

अलौकिक विग्रह — अर्थ अम् प्रति

'अर्थमर्थम्प्रति' इस लौकिक विग्रह में 'अर्थ अम्' तथा 'प्रति' का 'अव्ययं विभक्ति०' सूत्र से वीप्सा अर्थात् बिरुक्ति के रूप पदार्थ में 'अव्ययीभाव समास' हुआ।

'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिक संज्ञा

'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' से 'अम्' का लोप

अर्थ प्रति

'प्रथमा निर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' से 'प्रति' की उपसर्जन संज्ञा

'उपसर्जनं पूर्वम्' से उपसर्जनसंज्ञक 'प्रति' का पूर्वप्रयोग

प्रति अर्थ

'इको यणचि' से 'इ' को 'य' — प्रत्य अर्थ

— प्रत्यर्थ

'एकदेशविकृतमनन्यवत्' इस न्याय से पुनः प्रातिपदिक संज्ञा
'स्वौजस०' से सु विभक्ति

प्रत्यर्थ सु

'अव्ययीभावश्च' से अव्यय संज्ञा
'अव्ययादाप्सुपः' से 'सु' लोप प्राप्त था, किन्तु 'नाव्ययीभावादतोऽत्वपञ्चम्याः' से उसका निषेध कर 'सु' को 'अम्' आदेश हुआ।

प्रत्यर्थ अम्

'अमि पूर्वः' से पूर्व रूप होकर 'प्रत्यर्थम्' प्रयोग सिद्ध होता है।

5) <u>यथाशक्ति</u> — यथार्थ चार प्रकार के हैं — योग्यता, वीप्सा, पदार्थ की अनतिवृत्ति अर्थात् अनतिक्रमण तथा सादृश्य। यहाँ पर पदार्थानतिवृत्ति रूप यथार्थ में समास हुआ है।

लौकिक विग्रह — शक्तिम् यथा (अनतिक्रम्य)
अलौकिक विग्रह — शक्ति अम् यथा

'शक्तिमनतिक्रम्य' इस लौकिक विग्रह में शक्ति अम् तथा यथा का पदार्थानतिवृत्ति रूप (पदार्थ का उल्लंघन न करना) यथार्थ में 'अव्ययं विभक्ति०' सूत्र से अव्ययीभाव समास हुआ।
'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिक संज्ञा
'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से सुप् (अम्) का लोप

शक्ति यथा

'प्रथमा निर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' से 'यथा' की उपसर्जन संज्ञा
'उपसर्जनं पूर्वम्' से उपसर्जन संज्ञक 'यथा' का पूर्व प्रयोग

यथा शक्ति

'एकदेशविकृतमनन्यवत्' से पुनः प्रातिपदिक संज्ञा
'स्वौजस०' से 'सु' विभक्ति

यथा शक्ति सु

'अव्ययीभावश्च' से अव्यय संज्ञा
'अव्ययादाप्सुपः' से 'सु' लोप होकर

यथाशक्ति प्रयोग सिद्ध होता है।

<u>अथवा</u> 'अव्ययीभावश्च' से नपुंसकत्व होने के कारण 'स्वमोर्नपुंसकात्' से 'सु' विभक्ति का लोप होने पर <u>'यथाशक्ति'</u> प्रयोग सिद्ध होता है।